

ई-सिगरेट से धूम्रपान छोड़ने में मदद नहीं मिलती

इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट (ई-सिगरेट) के विवाद ने एक बार फिर तूल पकड़ लिया है। इस बहस को हवा देने का काम हाल ही में किए गए एक अध्ययन ने किया है जिसका निष्कर्ष है कि इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट से धूम्रपान छोड़ने में कोई मदद नहीं मिलती।



पामेला लिंग और उनके साथियों ने 949 धूम्रपानियों का अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला है कि ई-सिगरेट के समर्थकों के दावे में कोई दम नहीं है। इनमें से 88 व्यक्ति ऐसे थे जो ई-सिगरेट का उपयोग करते हैं। अध्ययन में पता चला कि इन 88 व्यक्तियों में ई-सिगरेट

का उपयोग शुरू करने के एक साल बाद सिगरेट छोड़ने की संभावना लगभग उतनी ही थी जितनी कि सामान्य सिगरेट पीने वालों में।

ई-सिगरेट एक उपकरण होता है जिसमें एक हीटिंग एलीमेंट की मदद से निकोटिन का वाष्पीकरण किया जाता है और धूम्रपान करने वाला व्यक्ति इस वाष्प को सूंघता है। तंबाकू के असर व लत पर शोध करने वाले वैज्ञानिकों में इस बात को लेकर तो प्रायः आम सहमति है कि सिगरेट की बजाय निकोटिन वाष्प का सेवन करने से उतना नुकसान नहीं होता क्योंकि सिगरेट के धुएं में तो और भी कई रसायन पाए जाते हैं। लिहाज़ा, ई-सिगरेट के समर्थकों का कहना है कि यह लाखों लोगों को जानलेवा नुकसान से बचा सकती है।

इस अध्ययन के आधार पर लिंग का मत है कि ई-सिगरेट के उन विज्ञापनों पर प्रतिबंध लगाना चाहिए जिनमें दावा किया जाता है कि ई-सिगरेट धूम्रपान छोड़ने में मददगार है। फिलहाल कोई ई-सिगरेट कंपनी अपने विज्ञापन में ऐसा दावा नहीं करती है। कारण यह लगता है कि जिस दिन किसी कंपनी ने यह दावा किया, उसी दिन खाद्य व औषधि प्रशासन उस पर शिकंजा कस लेगा क्योंकि तब ई-सिगरेट को एक औषधि मान लिया जाएगा।

अलबत्ता, बहस इस बात पर है कि ई-सिगरेट के निर्माता दावा करते हैं कि ई-सिगरेट का इस्तेमाल करने से व्यक्ति को सिगरेट छोड़ने में मदद मिलती है। दूसरी ओर धूम्रपान विरोधियों का कहना है कि ई-सिगरेट का एक बड़ा नकारात्मक पक्ष यह हो सकता है कि इसके चलते धूम्रपान को ज़्यादा सामाजिक स्वीकृति मिलने लगेगी और सिगरेट छोड़ने की रही-सही इच्छा भी जाती रहेगी।

वैसे इस मामले में कई अन्य शोधकर्ताओं का कहना है कि यदि ई-सिगरेट तंबाकू से होने वाले नुकसान को कम करती है, तो यह अपने आप में एक अच्छी बात है। इसके अलावा कई शोधकर्ता यह भी कह रहे हैं कि उक्त अध्ययन इस तरह किया ही नहीं गया है कि इसके आधार पर पुख्ता निष्कर्ष निकाले जा सकें। कुछ लोगों का तो मानना है कि ऐसे अध्ययन सिगरेट कंपनियां ही करवा रही हैं। **(स्रोत फीचर्स)**

अब कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय की तंबाकू शोधकर्ता